भजन

तर्ज– खुदा करे मोहब्बत में

कभी तो इश्क में अपने भी वह असर आए
के बेखुदी में हमेशा पिया नजर आए

1 जमाने भर के गिले–शिकवे सुना ही ना करें
मर के दुनिया में तरफ हक की जीते ही रहे
दीवारों दर की हदों से हम यूं गुजर जाएं

2 आह निकले भी अगर मुख से पिया पिया ही कहे
एक तन मन हो जुदा होकर एक पल न रहे
इश्क की आखिरी मंजिल का हमसफर पायें

3 जब भी देखें तो पिया की ही वो नजर देखें
धाम वाहेदत में हम अपने ही वो फज़र देखें
वक्त आखिर का दर्द लेकर कुछ संभल जाएं

4 रात और दिन क्या है इक पल भी ना करार आये
एक होकर के ही रह जाऐं इतना प्यार आए
ये आशिकी का हंसी मंजर बस ठहर जाऐ